

वरिष्ठ गुरुभाई लोगो से सविनय आग्रह है, अगर बच्चों के सवाल के जवाब नहीं आते हैं .. तो चुप रहा कीजिये ..

लेपा पोती मत कीजिये ..

सबका दो तीन बहुत famous excuse हो गया है , वो ये की ..

1. गुरु मन्त्र जपते रहो, सब गुरु करेंगे .
2. सुबह साधना करो 4-6 के बीच ..
3. त्रिमूर्ति के बारे में हम् कुछ नहीं सोच सकते बोल सकते

आदि आदि इत्यादि ..

भैया लोग एक बात सुन लीजिए ..

पानी जरूरी है, जल बिन सब सून ..

हवा बिना बिना जीवन नहीं है ..

इसका मतलब केवल हवा और पानी से ही जिंदगी नहीं चलता है .. इसके अलावा भी धरती दुनिया में और कुछ है।

गुरु साधना के प्राणाधार होते हैं, गुरु से ही साधना है .. बिल्कुल सत्य है .. लेकिन एक छोटे साधक गुरुमंत्र से ही सबकुछ नहीं कर सकता है।

ट्रैक change करते हैं .. आज किसी ने बोला कि ग्रुप के जो नाम है.. उसपे चर्चा क्यों नहीं करते हैं ... "असफलता क्यों" ..

ये बड़ा महत्वपूर्ण और productive सवाल है।

असफलता के पहला कारण ..

तुमने निखिलेश्वरानंद जी को केवल गुरुमंत्र तक ही सीमित समझ लिया .. ये तुम्हारी सबसे बड़ी भूल है ..

गुरुमंत्र तुम्हें गुरु से जोड़ता है, कर्म बंधनों को काट कर पाप नाश कर आत्मा को निर्मल बनाता है .. साधना की आगे की भावभूमि तैयार करती है ... इसका मतलब ये नहीं कि .. यही निखिलेश्वरानंद जी का समस्त रूप है।

भैया मेरे ..

निखिलेश्वरानंद जी स्वरूप तो ब्रह्मांडीय है .. इससे अलग हट कर वे न जाने कितने कितने रूपों में .. कितने कितने लोकों में विराजमान हैं।

खोपड़ी में बात समझ नहीं आया होगा ...

उदाहरण देते हैं ..

बगलामुखी के एक अक्षर का बीज मंत्र है, 4 भी है, 6, 8, 11, 19 अक्षर भी है, और 36 अक्षर भी है, माला मन्त्र भी है।

तुम अगर सारी जिंदगी बगलामुखी के एक अक्षरीय का ही जप करते रहोगे तो सिद्धि तो मिलेगी, लेकिन सम्पूर्ण नहीं मिलेगा ..

बगलामुखी के सम्पूर्ण सिद्धि के लिए .. एक अक्षर से 36 अक्षर तक फिर माला मन्त्र तक तुम्हें पहुँचना पड़ेगा ..

ठीक उसी तरह ..

अगर तुम निखिलेश्वरानंद जी के अन्य समस्त स्वरूपों की सिद्धि चाहते हो तो .. तुम्हें *गुरुमंत्र के साथ साथ निखिल प्रदत्त अन्य गुरु साधनाएं भी करनी पड़ेगी* ...

तंत्र में एकदम आगे बढ़ना चाहते हो तो ..

निखिलेश्वरानंद जी को निम्न 9 स्वरूपों में सिद्ध करना ही होगा ..

1. उन्मनाकाशनन्द
2. समनाकाशनन्द
3. व्यापकाशानंद
4. शक्त्या काशानंद
5. ध्वन्याकाशानंद
6. ध्वनिमात्राकाशानंद
7. आनहताकाशानंद
8. विद्धाकाशानंद
9. द्वंद्वकाशानंद

ये 9 उंस निखिल शक्ति के विस्तार है। इसके बिना तुम तन्त्र मे आगे न बढ़ सकोगे ..

तुम्हारे अंदर 9 पिंड है, जो 9 ग्रह कहलाते हैं। वही 9 तुम्हारे समस्त शरीर को कंट्रोल करता है।

इस 9 पिंड पे निखिलेश्वरानंद के उपरोक्त 9 शक्तियों को स्थापित कर दो ..

बस आगे का काम .. निखिलेश्वरानंद जी के नाम छोड़ दो ..

तुम्हारी असफलता के दूसरा कारण ..

तुम भीड़ चाल में चलकर .. नामुरादों की नकल कर कर के केवल यंत्र और चित्र के पूजन को ही निखिलेश्वरानंद जी का पूजन समझा .. ये बड़ी गलती है।

थोड़ा चौकन्ना रहकर आगे पढ़ना ..

नारायण दत्त श्रीमाली .. निखिलेश्वरानंद जी हैं, लेकिन .. प्रभुपाद निखिलेश्वरानंद जी केवल नारायण दत्त श्रीमाली नहीं हैं, .. निखिलेश्वरानंद जी अलग अलग काल खंडों में अलग अलग रूपों में अवतरित हुए हैं... उनका 1923 से 1998 तक का जो कालखंड है, उसमें लोगों ने उसे नारायण दत्त श्रीमाली के नाम से जाना

निखिलेश्वरानंद न कभी मरा है, न कभी मरेगा .. अलग अलग कालखंडों में वो अलग अलग नाम से आता था, और आगे फिर आयेगा ...

गुरु दीक्षा के बाद ..निखिलेश्वरानंद का वो परमतत्व .. तुम्हारे विश्वास, श्रद्धा, भक्ति, प्राण शक्ति आदि का सहयोग से ... तुम्हारे हृदय के द्वादश कमल में बीच, ज्योति स्वरूप में .. जन्म लेता है .. जिसको ... आत्म गुरु कहते हैं।

तुम्हें इसकी पूजा और साधना करना है, ना कि चित्र आदि की ..

चित्र आदि तो नए नए बच्चों की तरह स्लेट-पेंसिल की तरह सीखने के लिए दी जाती है।

मेरे गुरुभाइयों ..

तुम्हें यहाँ से आगे उठना है .. और अपने अंदर आत्म गुरु की सिद्धि करना है। ये परमावश्यक है। यही आत्म गुरु तुम्हारे समस्त सवालों के जवाब देगा, कहीं जाकर माथा पटकने की जरूरत नहीं पड़ेगी ... कोई अघोरी, फेसबुकिये, या वरिष्ठ गुरुभाई तुम्हें बेवकूफ न बना सकेगा ..

तुम्हारी असफलता का तीसरा कारण

सभी जानते हो .. तन्त्र का मार्ग इतना आसान नहीं है .. फिर भी गलती करते हो।

हर साधना की एक निश्चित भावभूमि होती है, जब उस भावभूमि को प्राप्त कर .. उस भाव भूमि पे बैठकर उस साधना को उसी भाव से करोगे तब तुम्हें उस साधना में .. अपेक्षाकृत जल्द अनुकूलता मिलेगी ..

वैसे अपने मन से कुछ न कुछ करोगे तो .. न घर का न घाट का ... वाली स्थिति रहेगी ..

तन्त्रशास्त्र कहता है .. 3 भाव होते हैं ..

1. पशुभाव
2. वीर भाव
3. दिव्य भाव

हर साधक जन्मजात पशुभाव में होता है .. इससे ऊपर उठना है ..

निरंतर गुरु मन्त्र, चेतना मन्त्र, गायत्री मंत्र जपने से तुम्हारी पाशविक प्रवृत्ति खत्म होती है।

इसके बाद गुरु शिष्य का इष्ट चुनाव कर .. निरंतर इसकी साधना साधना करवाता है।

फिर शिष्य का दो दीक्षा .. शिष्यभिषेक और शाक्त अभिषेक दीक्षा दी जाती है।

जिससे साधक पशु भाव खत्म होता है, शिष्य भाव आता है, गुरु की शक्ति को पूर्ण रूप से ग्रहण कर पाता है, संकेतो को समझ पाता है।

शाक्त अभिषेक दीक्षा के बाद .. शिष्य शक्ति से सम्बंधित साधनाएं करने का उत्तराधिकारी बनता है।

फिर शिष्य का पूर्णाभिषेक दीक्षा किया जाता है, जिससे वो वीरभाव में प्रवेश करता है।

इससे आगे बाद में राज्याभिषेक और साम्राज्याभिषेक दीक्षा दी जाती है, जिससे वीरभाव का पूर्ण उपलब्धि होती है।

भैरव , धूमावती , कृत्या आदि की साधनाएं वीरभाव में जाती है .. तो इस वीरभाव की प्राप्ति के लिए गुरु के शरण में जाकर उपरोक्त दीक्षाओं के माध्यम से तुम्हें साधना करनी पड़ेगी, फिर जब वीर भाव को प्राप्त होवोगे तो इन उग्र साधनाओं को ठीक ठीक कर पाओगे ..

इस ग्रुप के एक साधक वैताल साधना में असफल रहा .. कारण की .. वैताल साधना वीर भाव में की जाती है, अब वीरभाव इसके अंदर था ही नहीं .. इसलिए असफल रहा ...

जो देवतां वीरभाव का है, उसकी सधना वीरभाव से ही करनी पड़ेगी ..

अब इससे आगे चलकर .. दो

महासाम्राज्याभिषेक दीक्षा और पूर्ण दीक्षा होती है, जिससे साधक दिव्य भाव को प्राप्त कर पाता है।

उच्च कोटि की साधनाएं .. श्रीविद्या, ब्रह्मविद्या, ब्रह्माण्ड साधना आदि .. दिव्यभाव में की जाती है।

तन्त्र शास्त्र बहुत गहरा है ..

समय समय पे आगे बातें होती रहेगी ..

आज इतना ही ..

आगे शक्ति तत्व जागरण की बात करेंगे ..

अब 4 बज गए ... साधना का समय हुआ .. निकलता हु ...

तुम्हारी असफलता के चौथा कारण

तुम्हारी शक्ति की साधनाये चाहे वो नवार्ण हो, महाविद्या हो .. जल्दी क्यों नहीं फलीभूत होती है ??

इसलिए नहीं होती है .. क्योंकि तुमने अपने अंदर शक्तिचक्र को जाग्रत नहीं किया है। शक्ति का द्वार खुला नहीं है ..

किले का द्वार बन्द है, उसके बाहर बड़ा सा ताला लगा हुआ है .. बाहर तुम माथा पटकते रहो, लाखों मन्त्र जप करते रहो ..सालों साल तक मन्त्र जप करते रहो .. घण्टा कुछ ना होगा .

थोड़ी बहुत चमत्कार दिख जाएगी, कार्य सिद्ध हो जायेगा .. लेकिन जो तुम्हारे अभीष्ट है वो नहीं मिल पायेगा ..

जरा सा बुद्धि का इस्तेमाल करो .. माथा पटकना बंद करो, लाखों मन्त्र जपना बंद करो, और थोड़ा चालाकी से उस शक्ति के दरवाजे के ताले खोलने का प्रयास करो ..

अगर ताले खुल गए .. तो सीधे शक्ति के राजमहल में प्रवेश कर जाओगे .. वहीं सारी देव शक्तियां विराजमान हैं।

तुम्हारी सभी शाक्त साधनाएं तीव्र गति से फलीभूत होने लगेंगी ..

खोपड़ी में बात नहीं आयी होगी .. तो उदाहरण सुनो ..

आज से 9-10 साल पहले की बात है, मेरी उम्र 16-17 साल का होगा, और मेरा दोस्त था द्विवेदी जी , चित्रकूट का ..

दोनों ने नावर्ण साधना शुरू किया .. द्विवेदी जी बड़ा जिद्दी .. रोज 100 माला मन्त्र जप करता था, और 27 लाख का पुरस्करण किया .. लेकिन उसने जो अभीष्ट पाना चाहा वो न पा सका...

हम केवल नवरात्रि में अनुष्ठान करते थे, पहली बार ही वो दृश्य अनुभव कर लिया .. जिसका वर्णन करना उचित नहीं है। गुरुदेव अरविंद जी ने इसकी दीक्षा दिया था।

यहाँ अतिशयोक्ति नहीं .. समझने वाली बात है ..

तो साधना मुझमें तीव्रता से फलीभूत क्यों हो रहा था ... ??

इसके दो कारण थे ... पहला तो शक्तिपात, दूसरा हमने शक्ति तत्व के जागरण पे बहुत ध्यान दिया था।

तुमने तो पांच तत्व ही सुने होंगे .. actual में 5 नहीं 36 तत्व होते हैं, और 36 प्रकार के मन मे संचारी विचार होते हैं जिनपे विजय पाकर इन 36 तत्वों को चैतन्य रखते हैं। मेरा विषय यहां ये नहीं है, मुद्दा भटक जाएगा ..

जब साधक एक विशिष्ट गोपनीय साधना प्रक्रियाओं को अपनाता हुए इसका अभ्यास करता है ... और जब साधना फलीभूत होती है तो .. साधक के अंदर शक्तित्व जागरण के 10 लक्षण प्रकट होते हैं ..

1. आंख बन्द करते ही उसे एक गोल प्रकाश बिंदु दिखेगा, जो धीरे धीरे गुरु का स्पर्श पाकर बढ़ता जाएगा ..
2. कभी कभी हृदय स्थल पे एक गोल चक्र घूमता दिखेगा .. मन्त्र जप खुद ही होने लगता है, मन अंदर डूबने लगता है,
3. साधक के अंदर से भय, संशय का नाश हो जाता है, वीरभाव का उदय होता है।
4. किसी को देखते ही, या भविष्य की घटनाओं का पूर्वानुमान लग जाता है। कोई भी तुम्हें बेवकूफ नहीं बना सकेगा ..
5. कभी रात में सोते समय गुदगुदी सा अनुभव होता है, लगेगा कोई शक्ति मेरे शरीर से खेल रही है, कोई दबोच लेगा .. actual में ये एक ऊर्जा का वर्तुल होता है।
6. झुठ, बुराई, पाप से मन हट जाएगा, अगर करोगे तो खुद ही अंदर अंदर बहुत आत्मग्लानि होगी ..
7. अचानक से कोई सुगंध , कोई चिंगारी दिखेगा, महसूस होगा, .. शरीर प्रसन्न और रोम रोम खिल जाएगा .. कभी कभी साधक तीव्रता के कारण बेसुध हो गिर पड़ता है ..
8. शरीर, नेत्र और चेहरे की चमक बढ़ जाता है,
9. शाप और आशीर्वाद फलीभूत होने लगता है ..

तो ये सब शक्तित्व जागरण के आरंभिक लक्षण हैं, इसको और बढ़ाना है ..

जब ये लक्षण आपके अंदर परिलक्षित होने लगे . तब समझना अब .. हम आगे उच्च कोटि के महाविद्या साधनाओ आदि के लिए तैयार हो चुके हैं, भावभूमि बन चुकी है

जबतक शक्ति तत्व का जागरण न हो जाय .. महाविद्याओं की साधनाएं को रोके रहो .. फायदे में रहोगे ..

ये हमने तन्त्र के कुछ मुलभुत मौलिक बातें बताई ..

(मैंने कुपात्रों ओर स्वघोषित वरिष्ठों से हाथ से बचाने के लिए साधना विधान गोपनीय कर दिया, यहाँ नहीं लिखा है)

आज इतना ही .. अब निन्द आने लगा .